Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja College Ara

Date; 25/06/2025

Class: U.G Semester - V
(MJC-8)

Clinical Psychology,

Topic- नैदाननक मनोनिज्ञान का इतिहास
(History of clinical psychology)

नैदानिक मनोविज्ञान का इतिहास

15 वी शताब्दी के उत्तरार्ध में मनोविज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन विश्वविद्यालयों के प्रयोगशालाओं में भली-भांति स्थापित हो रहा था। यद्यपि छिट-पुट रूप से एक व्यावहारिक मनोविज्ञान के लिए आवाज उठाई जा रही थी, पर सामान्य क्षेत्र ने इस विचार पर असहमति जताई तथा केवल शुद्ध विज्ञान को ही प्रतिष्ठित कार्यप्रणाली के रूप में माना.

हालांकि जब कुंड (Wundt) के एक पूर्व छात्र तथा पेन्सिल्वेनिया विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष लाइटनर विट्मर (1867-1956) वर्तनी की समस्या के शिकार एक छोटे लड़के के उपचार के लिए सहमत हुए, तब इसमे बदलाव आया। उसके सफल उपचार के परिणामस्वरूप विट्मर ने वर्ष 1896 में पेन (Penn) में प्रथम मनोवैज्ञानिक चिकित्सालय की स्थापना की. जो सीखने की समस्या से ग्रस्त छोटे बच्चों के प्रति समर्पित था।

दस वर्ष पश्चात विट्मर ने इस क्षेत्र के प्रथम जर्नल, द साइकोलॉजिकल क्लिनिक (The Prychological Clinic) की नींव डाली, जिसमें उन्होंने क्लिनिकल साइकोलॉजी (नैदानिक मनोविज्ञान शब्द का प्रथम प्रयोग किया, जिसे परिवर्तन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किए प्रेक्षण या प्रयोग द्वारा व्यक्तियों का अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया।

यह क्षेत्र विटमर के उदाहरण के अनुपालन के लिए धीमा था, पर वर्ष 1914 तक अमेरिका में इस तरह के 26 चिकित्सालय खुल चुके थे।

भले ही नैदानिक मनोविज्ञान का प्रयोग बढ़ रहा था, पर गंभीर मानसिक तनाव वाले रोग मनः चिकित्सा तथा तंत्रिका विज्ञान के अधीन रहे।

नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपने मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की बढ़ती क्षमता के कारण निरंतर रूप से इस क्षेत्र में कार्य करते रहे. मूल्यांकन विशेषज्ञ के रूप में मनोवैज्ञानिकों की प्रतिष्ठा प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान बढ़ी, जब दो बुद्धि परीक्षण (intelligence test), आर्मी अल्फा (Army Alpha) तथा आर्मी बीटा (Beta) (क्रमशः मौखिक तथा अमौखिक क्षमता की जांच का विकास हुआ, जिसका उपयोग रंगरूटों की बड़ी संख्या पर किया जा सका.

इन परीक्षणों की भारी सफलता के कारण, अगली चौथाई सदी तक यानि दूसरे विश्वयुद्ध द्वारा इस क्षेत्र को उपचार की ओर अग्रसर करने तक, मूल्यांकन, नैदानिक मनोविज्ञान का प्रमुख विषय बना रहा.

नैदानिक मनोविज्ञान, clinical psychology मनोवैज्ञानिक आधार वाले संकट या दुष्क्रियता से बचाव तथा राहत प्रदान करने या व्यक्तिपरक स्वास्थ्य तथा व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने वाला एक एकीकृत विज्ञान, सिद्धांत तथा नैदानिक ज्ञान है।

इस पद्धति के केंद्र में होते हैं मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन तथा मनोचिकित्सा, यद्यपि नैदानिक मनोवैज्ञानिक, अनुसंधान, शिक्षण, परामर्श, विधि चिकित्साशास्त्र संबंधी साक्ष्य (forensic testimony) तथा कार्यक्रम विकास एवं प्रशासन में भी संलिप्त होते हैं।

कई देशों में नैदानिक मनोविज्ञान एक नियंत्रित मानसिक स्वास्थ्य पेशा है।

इस क्षेत्र का आरंभ, प्रायः वर्ष 18596 में पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में लाइटनर विट्मर (Lightner Witmer) द्वारा प्रथम मनोवैज्ञानिक चिकित्सालय की स्थापना के साथ माना जाता है।

20 वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में नैदानिक मनोविज्ञान मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन पर केंद्रित था, जिसमें उपचार पर कम ध्यान दिया जाता. 1940 के दशक के बाद, जब द्वितीय विश्व युद्ध में प्रशिक्षित चिकित्सकों की बड़ी संख्या में आवश्यकता हुई, तब इसमें बदलाव आया।
तब से लेकर आज तक दो प्रमुख शैक्षणिक प्रारूपों का विकास हुआ पीएचडी विज्ञान-चिकित्सक प्रारूप (नैदानिक अनुसंधान पर केंद्रित) और मनोवैज्ञानिक (Psy.D.)- चिकित्सक-विद्वान प्रारूप (नैदानिक चिकित्सा पर केंद्रित), नैदानिक मनोवैज्ञानिक अब मनोचिकित्सा के विशेषज्ञ माने जाते हैं,

तथा वे सामान्यतः चार प्रमुख प्राथमिक सैद्धांतिक अभिमुखन-

1-मनोगतिकी**,**
2-मानविकी**,**
3-व्यवहार उपचार/संज्ञानात्मक स्वभावजन्य
4-प्रणालियों या पारिवारिक उपचारों में प्रशिक्षित होते हैं।

<u>आधुनिक इतिहास</u>

नैदानिक मनोवैज्ञानिक कई प्रकार की पेशागत सेवाएं पेश करता हैं. जिनमें शामिल है:

<u>*मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन तथा जांच का प्रबंधन तथा व्याख्या.</u>
<u>*मनोवैज्ञानिक शोध का आयोजन</u>
<u>* परामर्श *(विशेषकर स्कूलों तथा व्यावसायों के साथ)*</u>
<u>*बचाव तथा उपचार कार्यक्रमों का विकास</u>
<u>*कार्यक्रम प्रशासन</u>
<u>*विशेषज्ञ को साक्ष्य प्रदान करना *(न्यायालयिक मनोविज्ञान)*</u>
<u>*मनोवैज्ञानिक उपचार प्रदान करना *(मनः चिकित्सा)*</u>
<u>*शिक्षण</u>

व्यवहार में नैदानिक मनोविज्ञान व्यक्तियों, दंपत्तियों, परिवारों या विभिन्न व्यवस्थाओं के समूहों, निजी चिकित्सा-कार्यों समेत, अस्पतालों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, स्कूलों, व्यवसायों एवं गैर-लाभ वाली एजेंसियों के

साथ कार्य कर सकते हैं। अनुसंधान तथा शिक्षण में जुटे अधिकतर नैदानिक मनोवैज्ञानिक ऐसा कॉलेज या विश्वविद्यालय के अंतर्गत करते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक किसी विशेष क्षेत्र- विशेषज्ञता के सामान्य क्षेत्र, की विशेषज्ञता चुन सकते हैं, उनमें से कुछ बोर्ड प्रमाणन प्राप्त कर सकते हैं, जिनमें शामिल है।

- बाल तथा किशोर
- परिवार तथा संबंध परामर्श
- विधि चिकित्साशास्त्र सम्बंधी
- स्वास्थ्य
- तंत्रिका-मनोवैज्ञानिक रोग **(Neuropsychological disorders)**
- संगठन तथा व्यवसाय
- स्कूल
- विशेष रोग **(**जैसे**,** आघात**,** व्यसन**,** भोजन**,** शयन**,** यौनकर्म**,** नैदानिक अवसाद**,** चिंता**,** या भीति**)**
- खेल

<u>मूल्यांकन</u>

कई नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिए विशेषज्ञता का महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन, तथा यह संकेत मिलते हैं कि लगभग 91% मनोवैज्ञानिक इस प्रमुख नैदानिक चिकित्सा-कार्य में शामिल हैं।

ऐसा मूल्यांकन प्रायः सेवा में किया जाता है ताकि मनोवैज्ञानिक या व्यवहारगत समस्यायों के बारे में संकल्पनाओं के निर्माण तथा उनकी गहन जानकारी प्राप्त की जा सके. इस प्रकार ऐसे मूल्यांकनों के परिणामों का उपयोग प्रायः सेवा में सूचना उपचार योजना के प्रति सामान्य धारणाओं (रोगनिदान की बजाए) को निर्मित करने के लिए किया जाता है।

इन विधियों में औपचारिक जांच उपाय, साक्षात्कार, पूर्व के रिकॉर्डों का पुनरीक्षण, नैदानिक अवलोकन तथा शारीरिक परीक्षण शामिल हैं।

वास्तव में कई प्रकार के मूल्यांकन संसाधन मौजूद हैं, पर केवल कुछ को ही उच्च वैधता (अर्थात, आकलन की दावे को आकलित करने हेतु जांच) तथा विश्वसनीयता (अर्थात, एकरूपता) प्राप्त है।